विषय सूची

- आवरण
- आभारोक्ति
- निदेशक की कलम से
- प्रतिभागी सूची
- पाठ्यक्रम
- अपठित बोध
- पाठ्यपुस्तक
- पूरक पुस्तक
- व्याकरण एवं रचना
- प्रतिदर्श प्रश्नपत्र

अपठित बोध

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

निरक्षरता राष्ट्र, समाज, जाति एवं व्यक्ति के लिए कलंक है। निरक्षर व्यक्ति के पास न तो स्वतंत्र चेतना शक्ति होती है न ही परिमार्जित संस्कार। न उसमें उद्बोधन शक्ति उत्पन्न होती है और न ही जाग्रति। न वह देश और राष्ट्र के कल्याण के लिए सोच सकता है, न ही सामाजिक एवं जाति विकास के सम्बंध में सोच सकता है और न ही अपने सामाजिक, जातीय एवं व्यक्तिगत विकास हेतु कार्य कर सकता है। निरक्षर व्यक्ति अपने देश के प्राचीन साहित्य एवं इतिहास से ज्ञानार्जन, शिक्षा तथा प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकता। शिक्षा के अभाव में व्यक्ति अपनी संस्कृति के उच्च जीवन मूल्यों का अनुकरण करने में असफल रहता है। वह सदा अंधविश्वासों, जादू-टोनों, कुरीतियों, कुसंस्कारों के जाल में फसा रह कर देश और समाज पर बोझ बन जाता है। वह न शिष्ट मित्र बन सकता है, न ही अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण कर सकता है। निरक्षरता के कारण देश को अच्छे नागरिक नहीं मिल पाते।

(क) गद्यांश में किसे कलंक माना गया है ?

(ख) निरक्षर व्यक्ति को बोझ क्यों माना गया है ?

(ग) निरक्षर व्यक्ति कौनसे कार्य नहीं कर सकता ?

(घ) देश को अच्छे नागरिक कैसे मिल सकते हैं?

(ङ) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

उत्तरमाला---

1. निरक्षरता को
2. क्योंकि निरक्षर व्यक्ति के पास न तो स्वतंत्र चेतना शक्ति होती है न ही परिमार्जित संस्कार न वो देश और राष्ट्र के लिए कुछ सोच सकता है
3. निरक्षर व्यक्ति अपने देश के प्राचीन साहित्य एवं इतिहास से ज्ञानार्जन, शिक्षा तथा प्रेरणा ग्रहण नहीं कर सकता न ही अपनी संस्कृति का अनुकरण कर सकता है
4. शिक्षा के प्रचार प्रसार से
5. शिक्षा का महत्त्व

1. डॉ. कलाम दृढ़ इच्छाशक्ति वाले वैज्ञानिक थे। वे भारत को विकसित देश बनाने का सपना संजोए हुए थे। उनका मानना था कि भारतवासियों को व्यापक दृष्टि से सोचना चाहिए। हमें सपने देखने चाहिए। सपनों को विचारों में बदलना चाहिए। विचारों को कार्यवाही के माध्यम से हकीकत में बदलना चाहिए। डॉ. कलाम तीसरे ऐसे वैज्ञानिक हैं, जिन्हें भारत का सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' दिया गया। उन्हें 'पद्मभूषम' तथा 'पद्मविभूष्ण' से भी सम्मानित किया गया। भारत को उन पर गर्व है। इतनी उपलब्धियाँ प्राप्त करने के बावजूद अहंकार कलाम जी को छू तक नहीं पाया। वे सहज स्वभाव के एक भावुक व्यक्ति थे। उन्हें कविताएँ लिखना, वीणा

बजाना तथा बच्चों के साथ रहना पसंद था। वे सादा जीवन उच्च विचार में विश्वास रखते थे। कलाम साहब का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणादायक है। कलाम जी तपस्या और कर्म ठता की प्रतिमूर्ति हैं। राष्ट्रपति पड़ की शपथ लेते समय दिए गए भाषण में उन्होंने कबीरदास जी के इस दोहे का उल्लेख किया था – 'काल करे सो आज कर, आज करे सो अब'।

I. डॉ.कलाम ने भारत को क्या बनाने का सपना देखा है?
II. डॉ. कलाम किस प्रवृत्ति के व्यक्ति थे?
III. डॉ. कलाम को क्या – क्या बेहद पसंद था?
IV. डॉ. कलाम को किन-किन सम्मानों से सम्मानित किया गया?
V. डॉ. कलाम की तरह आप भारत को आगे बढ़ाने के लिए क्या प्रयास करेंगे।

2. दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आईं, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूंग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

- 1. दादी माँ कहाँ से आई थी ?
- 2. दादी के बालों का रंग कैसा था ?
- 3. दादी ने सर, पेट क्यों छुए ?
- 4. दादी बुखार (ज्वर) को उतारने के लिए क्या – क्या उपाए करती थी ?
- 5. दादी घरवाले को कैसे प्रश्न पूछकर परेशान कर देती थी ?

3. अवतरण को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में ऐसे बहुत से कारखाने होते हैं जो रक्त कणों के निर्माण-कार्य में लगे रहते हैं। इनके लिए इन कारखानों को प्रोटीन, लौहतत्त्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की जरूरत होती है। यह पौष्टिक आहार लेते हो? हरी सब्जी, फल, दूध, अंडा और गोश्त में ये तत्त्व उपयुक्त मात्र में होते हैं। यदि कोई व्यक्ति उचित आहार ग्रहण नहीं करता तो इन कारखानों को आवश्यकतानुसार कच्चा माल नहीं मिल पाता। प्रायः यह समझा जाता है कि रक्तदान करने से कमजोरी हो जाएगी, किंतु यह विचार बिलकुल निराधार है। हमारा शरीर इतना रक्त तो कुछ ही दिनों में बना लेता है। वैसे भी शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है। इसमें से यदि कुछ रक्त किसी जरूरतमंद व्यक्ति के लिए जीवन-दान बन जाए तो इससे बड़ी बात क्या होगी!य् दीदी समझाते हुए बोलीं।

I. रक्त कणों की रचना कहाँ होती है ?

II. लेखक और पाठ का नाम बताइये ?

III. रक्त निर्माण के लिए किस कच्चे माल की आवश्यकता होती है ?

IV. रक्त के लिए कच्चा माल न मिलने पर क्या होता है ?

V. रक्तदान करने के बाद रक्त की कमी किस प्रकार पूरी हो जाती है ?

4. अवतरण को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

संतुलित आहार लेने मात्र से हम एनीमिया से बचे रह सकते हैं, यह कहना काफ़ी हद तक सही है। यों तो एनीमिया बहुत से कारणों से हो सकता है, किन्तु हमारे देश इसका सबसे बड़ा कारण पौष्टिक आहार की कमी है। इसके अलावा इस रोग का एक और बड़ा कारण है पेट में कीड़ों का हो जाना। ये कीड़े प्रायः दूषित जल और खाद्य पदार्थों द्वारा हमारे शरीर में प्रवेश करते हैं। अतः इससे बचने के लिए यह आवश्यक है कि हम पूरी सफाई से बनाए गए खाद्य पदार्थ को ग्रहण करें। भोजन करने से पूर्व अच्छी तरह से हाथ धो लें और साफ़ पानी ही पिएँ। और हाँ, एक किस्म के कीड़े भी हैं, जिनके अंडे ज़मीन की ऊपरी सतह में पाए जाते हैं। इन अण्डों से उत्पन्न हुए लार्वे त्वचा के रास्ते शरीर में प्रवेश कर आँतों में अपना घर बना लेते हैं। इनसे बचने का सहज उपाय है कि शौच के लिए हम शौचालय का ही प्रयोग करें और इधर-उधर नंगे पैर न घूमें।

- 1. भारतवर्ष में एनीमिया का मुख्य कारण क्या है ?
- 2. पेट में कीड़ों के होने के कारण क्या कारण हैं ?
- 3. नंगे पैर घूमने से क्या होता है ?
- 4. एनीमिया से बचने के चार उपाए लिखिए।

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

समय का आदर करना ही उसका सदुपयोग करना है। जो व्यक्ति समय की सही कीमत जान लेता है, वही जीवन में सफलता प्राप्त कर पाता है। यह धन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। धन खोने पर वापस पाया जा सकता है परंतु बिता हुआ समय नहीं लौटाया जा सकता। छात्रों के जीवन में इसका अधिक महत्त्व है। जो छात्र इस उम्र में समय की कद्र करना सीख जाते हैं, वह भविष्य में तरक्की की ऊंचाईयों को छू लेते हैं। चाणक्य, गाँधी जी, अशोक आदि ने समय का सदुपयोग क्र अपने पैरों के निशान छोड़ दिए। जीवन का प्रत्येक क्षण भविष्य का निर्माता है। जो लोग इसके महत्त्व को नहीं समझ पाते, वे केवल हाथ मलते रह जाते हैं। हम चाहे विश्राम कर लें परंतु समय कभी विश्राम नहीं करता। समय के प्रति सजगता मानव जीवन के लिए उपयोगी है। अतः छात्रों को समय की कीमत पहचानकर इसका सार्थक उपयोग करना चाहिए।

(क) 'समय का सदुपयोग' का क्या अर्थ है?

(ख) छात्रों के लिए समय का सदुपयोग अधिक आवश्यक क्यों है? (मूल्यपरक प्रश्न)

(ग) समय धन से अधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है?

(घ) गद्यांश में से मुहावरा ढूँढ़कर लिखिए।

(ङ) इस अनुच्छेद का कोई उपयुक्त शीर्षक दीजिए

6. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

दुनिया की हर एक चीज हमे शिक्षा देती है। एक दिन में धुप में घूम रहा था। चारो तरफ बड़े-बड़े हरे वृक्ष दिखाई देते थे। मैं सोचने लगा की ऊपर से इतनी कड़ी धुप पड़ रही है फिर भी ये वृक्ष हरे कैसे हैं? वे वृक्ष मेरे गुरु बन गए। मेरी समझ में आ गया की जो वृक्ष ऊपर से इतने हरे भरे दिखते हैं, उनकी जड़े जमीन में गहरी पहुंची है और वहाँ से उन्हें पानी मिल रहा है। इस प्रकार अंदर से पानी और ऊपर से धुप, दोनों की कृपा से यह सुंदर हरा रंग उन्हें मिला है। इसी तरह हमे भी अंदर से इच्छा शक्ति का पानी और बाहर से परिश्रम और बाधाओं की कड़ी धुप मिलती है तभी हम सफल हो सकते हैं।

(क) वृक्ष गुरु कैसे बन गए?

(ख) वृक्षों के हरे होने का लेखक को क्या कारण समझ आया?

(ग) जीवन में सफलता के लिए हमे अंदर से किसके रूप में पानी मिलता है?

(घ) आप अपने जीवन को हरा- भरा अर्थात सफल बनाने के लिए क्या करेंगे? (मूल्यपरक प्रश्न)

7. निम्नलिखित गद्यांश को पढकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

परिश्रम ऐसी साधना है जिसके द्वारा मनुष्य महान कार्य कर सकता है। परिश्रमी मनुष्य संसार में क्या नहीं कर सकता? वह पर्वत की चोटियों पर चढ़ सकता है, दुरूह- से दुरूह रेगिस्तानों को पार कर सकता है, कठिनाइयों को झेल सकता है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में संघर्ष करके उन्हें अपने जीवन के अनुरूप बना सकता है। जिस व्यक्ति में परिश्रम का गुण है, जिसमें पुरुषार्थ की प्रविति है, वह अपने जीवन में कदापि दुःख और निराशा आँधियों से भयभीत नहीं होता। व्यक्ति के जीवन के साथ पारिवारिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन में भी परिश्रम का महत्व है। परिश्रम के बिना व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र का जीवन खोखला ही रह जाता है। परिश्रम से जीवन में गतिशीलता आती है। यह गतिशीलता ही जीवन का वास्तविक चिन्ह होती है। निश्चेष्ट जीवन व्यतीत करने वालों की असफलता और अपयश के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं होता। गति के अभाव में जीवन की स्तिथि घाट के पत्थर जैसी होती है। जबकि मनुष्य के जीवन में पग-पग पर बाधाएं अपना जाल बिछा बैठी होती है। उसी समय यदि मनुष्य परिश्रम न करे तो वह कभी भी आगे नहीं बढ़ सकेगा।

1. उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्रश्न (क) परिश्रम के बिना क्या खोखला रह जाता है?

प्रश्न (ख) निश्चेष्ट जीवन व्यतीत करने वालों को क्या प्राप्त नहीं होता?

प्रश्न (ग) जीवन का वास्तविक चिन्ह क्या है?

प्रश्न (घ) जीवन में सफलता के लिए हमे अंदर से किसके रूप में पानी मिलता है?

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) लेखक ने परिश्रम को क्या माना है?

(ख) 'मृत्यु'तथा 'यश' शब्दों के विलोम शब्द गद्यांश से छांटकर लिखिए।

(ग) यदि मनुष्य परिश्रम न करे तो क्या होगा?

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो।

(क) एक छात्र के जीवन में परिश्रम का बहुत महत्व होता है? बताइए कैसे? (मूल्यपरक प्रश्न)

(ख) पुरुषार्थ की प्रवृत्ति वाला मनुष्य क्या कर सकता है?

8. निम्नलिखित गद्यांश को पढ कर पश्नों के उत्तर दें।

भारत पर्वो का देश है। यहाँ वर्ष भर में अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्व मनाए जाते हैं। इन पर्वो में रक्षा बंधन एक पवित्र और प्रसिद्ध पर्व है। यह त्योहार श्रवण मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है, इसलिए इसे श्रावणी या सलूनो भी कहा जाता है। इस दिन बहनें अपने भाइयों को रक्षासूत्र में बाँधती हैं, भाई भी उनके स्नेह का प्रतीक राखी को स्वीकार करके आजीवन उनके सम्मान की रक्षा करने का वचन देता है, इसलिए यह त्योहार रक्षा बंधन के नाम से प्रसिद्ध है।

रक्षा बंधन केवल भाई-बहन के प्रेम का ही प्रतीक पर्व नहीं है अपितु ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह पर्व महत्त्वपूर्ण है। वास्तव में भाई को राखी बाँधने की यह प्रथा राजस्थान से शुरू हुई थी। यदि किसी औरत पर कोई मुसीबत आती थी तो वह किसी वीर पुरुष को अपना भाई कहकर राखी भेज दिया करती थी। राखी का अर्थ था बहन की रक्षा का भार उठाना।

इतिहास में भी कई ऐसे उदाहरण हैं जब संकट में घिरी स्त्री ने किसी वीर को राखी भेज कर अपना भाई बनाया और रक्षा की प्रार्थना की। कहते है एक बार रानी कर्णवती ने बादशाह हुमायूँ को इसी उद्देश्य से राखी भेजी थी। वह मुसलमान था फिर भी अपनी मुँह बहन का न्योता पाकर बहन की रक्षा के लिए चल पड़ा था। राखी एक पावन-पर्व है। इस दिन घरों में मीठे भोजन और पकवान बनाए जाते हैं इससे हमें स्नेह, बंधुत्व व एकता की प्रेरणा मिलती है। यह त्योहार बहन भाइयों के रिश्ते को मजबूत करता है। यह एक-दूसरे के प्रति प्यार, विश्वास,

आशा, बलिदान को जागृत करता है। ऐसी भावनाओं को जागृत करता है कि बहन अपने भाइ के लिए सदा मंगल कामना करती है व भाई बहन के लिए रक्षा के वायदे करता है। भाई-बहन का पवित्र प्रेम रक्षा बंधन का आधार है। अतः हमें बिना किसी स्वार्थ के स्नेह भावना के साथ रक्षा बंधन का पर्व मनाना चाहिए।

(1) राखी या रक्षा बंधन का दूसरा नाम क्या है?

(2) हिंदी कैलेंडर के हिसाब से राखी का पर्व किस मास में मनाया जाता है?

(3) भाई को राखी बाँधने की यह प्रथा कहाँ से शुरू हुई थी?

(4) राखी के पावन पर्व पर घरों में क्या बनाया जाता है?

(5) राखी के पावन पर्व से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(6) आधुनिक अर्थ प्रधान तथा स्वार्थपूर्ण युग में रक्षा बंधन जैसा पावन पर्व अपनी सांस्कृतिक भावना खोता जा रहा है – इस विषय पर अपने विचार लिखिए।

अपठित पद्यांश

पद्यांश पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

सागर के उर पर नाच नाच करती हैं लहरें मधुर गान
जगती के मन को खींच-खींच
निज छवि के रस सींच-सींच
जल कन्याएँ भोली अजान,
सागर के उर पर नाच-नाच करती हैं लहरें मधुरगान
प्रातः समीर से हो अधीर,
छूकर पल-पल उल्लसित तीर,
कुसुमावली-सी पुलकित महान,
सागर के उर पर नाच नाच, करती है लहरें मधुर गान
संध्या से पाकर रूचिर रंग
करती-सी शत सुर चाप भंग
हिलती नव तरु–दल के समान,
सागर के उर पर नाच नाच करती है लहरें मधुर गान,

क. लहरें कैसी लग रही है?
ख लहरें किस प्रकार लोगों का मन अपनी ओर खींच रही हैं?
ग लहरें अधीर होकर क्या काम करती हैं ?
घ 'कुसुमावलि' शब्द का संधि विच्छेद करें ।

ड़. लहरें किसके समान हिल रही हैं ?

उत्तरमाला

1 जल कन्याओं जैसी

2 नाच और गा कर

3 कुसुमावली सी पुलकित हो जाती हैं

4 कुसुम+अवली

5 तरु दल के समान

अभ्यास

1. काव्य पंक्तियों को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।
हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबौरी
कनक-कटोरी की मैदा से।
स्वर्ण- शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।
ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नीले नभ की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।
होती सीमाहीन क्षितिज से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।
नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

I. कवि का नाम लिखिए।

II. कविता का नाम लिखिए।

III. पिजरबद्ध का क्या अर्थ है ?

IV. पक्षी को अपने जीवन के लिए किस प्रकार का जल पीना अच्छा लगता है ?

V. 'स्वर्ण श्रंखला' के बंधन में पक्षी क्या भूल जाता है ?

VI. पक्षी सपनों में क्या देख रहा है ?

VII. पक्षी के क्या अरमान थे ?

VIII. पक्षी अपनी चोंच से क्या चुगना चाहता है ?

IX. पक्षी उड़ते-उड़ते क्या छू लेना चाहता है ?

X. पक्षी ने क्या इच्छा प्रकट की है ?

2. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: –

चारों ओर गंदगी फैली,
कूड़े-करकट का लगा अंबार।
यह तो है बाहरी गंदगी,
कर लो तुम इसका उपचार।
मंत्र स्वच्छता का अपनाओ,
स्वस्थ, सबल जीवन का दान।
दूर करो गंदगी, बच्चों,
करो देश-भर का कल्याण।।
दूर गंदगी होने से,
खुशियों का संसार बसेगा।
बस्ती अपनी सुंदर होगी,
वायु, देह, मन शुद्ध होगा।।
आओ करें मिलकर ये प्रण,
बनाएँ धरा को स्वर्ग से भी सुंदर।
सभी पशु पक्षी और प्राणी रहें सुरक्षित,
ऐसा प्रयास करें, हम मिलजुलकर।।

I. बाहरी गंदगी किसे कहा गया है?

II. कवि ने कौन सा मंत्र अपनाने को कहा है?

III. कवि के अनुसार हमें क्या प्रण लेना चाहिए और उससे क्या लाभ होंगे?

IV. गंदगी दूर होने से क्या लाभ होंगे? हमें अपने शहर और देश को साफ सुथरा रखने के लिए क्या कदम

a. उठाने चाहिए?

V. 'स्वच्छता' विषय पर अपनी राय लिखिए।

3. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए: –

धरती के आँचल में सजी

सँवरी हैं स्वर्ण रश्मियाँ,

खेतों में आज बिखरा है सोना

जिसे देख कर महका

कृषक मन का कोना-कोना।

किया धरती का सोलह-सिंगार

चमचमाते नयन बार-बार,

धानी चुनर में मोती सजे हैं

ढोल, ताशे और बाजे बजे हैं

दिल की वीणा के झंकृत हैं तार

झूमें-गाएँ सबके मन बार-बार।

हुए आँखों में सब सपने साकार

फिर से जागी हैं उम्मीदें हजार।

I. खेतों में क्या बिखरा हुआ है?

II. किसान के नयन क्यों चमचमाते हैं?

III. सबके मन क्यों झूम और गा रहे हैं?

IV. इस बार बेमौसम की बरसात ने फसलों का बहुत नुकसान किया है, आप इस बारे में क्या सोचते हैं? क्या हम इसके लिए कुछ कर सकते हैं?